# अध्याय – 6 भक्ति और सूफी परम्परा (अंकभार–7)

**बहुविकल्पात्मक प्रश्नः–**

1. मणिक्वचक्कार किसके अनुयायी थे?

   (a) शिव (b) विष्णु (a)

   (c) कृष्ण (d) राम

2. स्वयं को विष्णु की प्रेयसी मानकर अपनी प्रेमभावना छंदों में व्यक्त करने वाली अलवार महिला संत कौन थी?

   (a) करइक्काल अम्मइइयार (b) अंडाल (b)

   (c) मीरा (d) राधा

3. जगन्नाथ मंदिर कहां स्थित है ?

(a) तमिलनाडु में | (b) आंध्र प्रदेश में | (c)

(c) उड़ीसा में | (d) बिहार में

4. वीरशैव परंपरा के प्रवर्तक कौन थे ?

(a) बासवन्ना | (b) कबीर | (a)

(c) गुरु नानक | (d) अप्पार

5. किस चिश्ती संत को गरीब नवाज के नाम से जाना जाता है?

(a) निजामुद्दीन औलिया | (b) ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी

(c) शेख फरीदुद्दीन | (d) शेख मुइनुद्दीन चिश्ती | (d)

6. शेख मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह पर मुगल बादशाह अकबर कितनी बार आया था ?

(a) पांच बार | (b) नौ बार | (c)

(c) चौदह बार | (d) अठारह बार

7. मुगल शहजादी जहाँआरा किसकी बेटी थी ?

(a) बाबर की | (b) हुमायूं की | (d)

(c) अकबर की | (d) शाहजहां की

8. मारपेरू के स्वामी कौन है?

(a) विष्णु | (b) शिव | (b)

(c) कृष्ण | (d) राम

9. मीराबाई के गुरु कौन थे ?

(a) कबीर | (b) रामानुज | (d)

(c) रामानंद | (d) रैदास

10. कांस्य में ढाली गई नटराज शिव की प्रतिमाएं किस काल में बनी?

(a) मौर्य काल में | (b) गुप्त काल में | (c)

(c) चोल काल में | (d) चेर काल में

11. सिखों के दसवें गुरु कौन थे?

(a) गुरु नानक | (b) गुरु गोविंद सिंह | (b)

(c) अंगद | (d) गुरु तेग बहादुर

12. तवरम क्या था?

(a) भजनों के संकलन का ग्रंथ | (ब) दक्षिण भारत का एक संत | (a)

(c) दक्षिण भारत में प्रचलित संगीत | (d) वैष्णव परम्परा

13. "उलटबाँसी" रचनाओं का संबंध किससे रहा है?

(a) गुरु नानक | (b) कबीर | (b)

(c) रविदास | (d) बासवन्ना

14. शेख निजामुद्दीन औलिया की दरगाह कहां स्थित है?

(a) अजमेर | (b) फतेहपुर सीकरी | (d)

(c) अजोधन (d) दिल्ली

15. कबीर को भक्ति का मार्ग दिखाने वाले गुरु कौन थे ?

(a) रामानंद (b) रविदास (a)

(c) गुरु नानक (d) शंकर देव

16. किस संत ने अपने विचार पंजाबी भाषा में शबद के माध्यम से सामने रखे?

(a) अर्जुन देव (b) शंकर देव (d)

(c) कबीर (d) गुरु नानक

17. खालसा पंथ की स्थापना किसने की थी ?

(a) अर्जुन देव (b) गुरू नानक (d)

(c) तेग बहादुर (d) गोबिन्द सिंह

**अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नः–**

1. प्रारंभिक भक्ति आंदोलन कहाँ से और किसके नेतृत्व में हुआ?

उत्तर– (i) तमिलनाडु में।

(ii) अलवार (विष्णु के अनुयायी), नयनार (शिव के अनुयायी) संतों के नेतृत्व में।

2. सुफी संतों एवं सुल्तानों में तनाव उत्पन्न होने के कोई दो कारण बताएँ।

उत्तर– (i) सूफी संतों के अनुयायियों द्वारा उनके समक्ष झुककर प्रणाम करना एवं कदम चूमना।

(ii) सूफी संतों द्वारा आडंबरपूर्ण उपाधियों को धारण करना।

3. अंडाल और करइक्काल अम्मइइयार किसकी भक्त थी? अथवा अंडाल एवं करइक्काल अम्मइइयार कौन थी?

उत्तर– (i) अंडाल प्रसिद्ध अलवार/विष्णु भक्त भक्त थी। अंडाल एकमात्र अलवार महिला संत थी। अंडाल स्वयं को विष्णु की प्रेयसी मानकर अपनी प्रेमभावना छंदों में व्यक्त करती थी।

(ii) करइक्काल अम्मइइयार प्रसिद्ध नयनार/ शिव भक्त थी। शिवभक्त /नयनार परंपरा की स्त्री भक्त करइक्काल अम्मइइयार ने अपने उद्देश्य प्राप्ति हेतु घोर तपस्या का मार्ग अपनाया।

4. जंगम कौन थे?

उत्तर– जंगम वीरशैव मत से संबंधित यायावर भिक्षु थे।

5. अलवारों के उस मुख्य काव्य संकलन का नाम लिखिए, जिसका वर्णन तमिल वेद के रूप में किया जाता था और इस काव्य का संकलन किस भाषा में किया गया था?

उत्तर– नलयिरादिव्यप्रबन्धम्

नलयिरादिव्यप्रबन्धम् का संकलन 12 अलवारों ने तमिल भाषा में किया।

6. बासवन्ना ने किस भाषा में प्रचार किया तथा उनके द्वारा रचे गए पदों को किस नाम से जाना जाता था?

उत्तर– (i) बासवन्ना ने कन्नड़ भाषा में प्रचार किया ।

(ii) उनके द्वारा रचे गए पदों को वचन नाम से जाना जाता था ।

7. बारहवीं शताब्दी में कर्नाटक में एक नवीन आंदोलन का उदभव हुआ, जिसका नेतृत्व किसने किया?

उत्तर– बासवन्ना नामक ब्राह्मण

8. जीनन से क्या अभिप्राय है?

उत्तर–जीनन भक्ति गीत थे। इन्हें विशेष रागों में मुसलमानों द्वारा अपनी प्रार्थनाओं के दौरान गाया जाता था।

9. कश्मीर की सभी मस्जिदों में 'मुकुट का नगीना' किस मस्जिद को समझा जाता है?

उत्तर– श्रीनगर की झेलम नदी के किनारे बनी शाह हमदान मस्जिद को।

10. बा – शरिया एवं बे शरिया से क्या अभिप्राय है?

उत्तर– (i) शरिया (इस्लामी कानून) का पालन करने वाले सूफी संत बा–शरिया कहलाते थे।

(ii) शरिया की अवहेलना करने वाले सूफी संत बे–शरिया कहलाते थे।

11. यदि आप अजमेर की यात्रा करें तो किस चिश्ती संत की दरगाह पर जाना पसंद करेंगे ?

उत्तर– अजमेर में स्थित मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह पर

12. मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह पर आने वाला पहला सुल्तान कौन था?

उत्तर– मुहम्मद बिन तुगलक (1324–51)

13. किस हद तक उपमहाद्वीप में पाई जाने वाली मस्जिदों का स्थापत्य स्थानीय परिपाटी और सार्वभौमिक आदर्शों का सम्मिश्रण है?

उत्तर– (i) मस्जिदों के कुछ स्थापत्य संबंधी तत्त्व सभी जगह एक समान थे जैसे इमारत का मक्का की तरफ अनुस्थापन।

(ii) मस्जिदों के कुछ स्थापत्य संबंधी तत्त्व स्थानीय परिपाटी के थे जैसे छत का नमूना एवं निर्माण का सामान।

14. मुनिस–अल–अखाह (यानि आत्मा का विश्वस्त) किसकी जीवनी है और इसकी रचना किसने की?

उत्तर– मुनिस अल अखाह शेख मुइनुद्दीन चिश्ती की जीवनी है, जिसकी रचना मुगल बादशाह शाहजहाँ की बेटी जहाँआरा द्वारा की गई।

15. 1568 ईस्वी में किसने तीर्थयात्रियों के लिए खाना पकाने हेतु एक विशाल देग मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह को भेंट की?

उत्तर– मुगल बादशाह अकबर ने

16. पदमावत किसकी रचना है?

उत्तर– मलिक मुहम्मद जायसी की

17. किस चिश्ती संत की काव्य रचना गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित है?

उत्तर– बाबा फरीद की

18. किस सूफी संत को सुल्तान उल–मशेख (शेखों में सुल्तान) कहा जाता था?

उत्तर– शेख निजामुद्दीन औलिया के अनुयायी उन्हें सुल्तान उल–मशेख (शेखों में सुल्तान) कह कर संबोधित करते थे।

19. शेख सलीम चिश्ती की दरगाह कहाँ स्थित है??

उत्तर– फतेहपुर सीकरी में

20. बाबा गुरु नानक ने किसको अपने बाद गुरुपद पर आसीन किया?

उत्तर– गुरु नानक ने अपने अनुयायी अंगद को अपने बाद गुरुपद पर आसीन किया।

21. मसनवी से क्या अभिप्राय है? इनका उद्देश्य क्या था?

उत्तर– (i) मसनवी सूफियों द्वारा लिखित लंबी कविताएँ थीं।?

(ii) इनका उद्देश्य अल्लाह के प्रति मानवीय प्रेम को प्रकट करना है।

22. धर्म के इतिहासकार भक्ति परंपरा को किन दो मुख्य वर्गों में बाँटते हैं?

उत्तर– धर्म के इतिहासकार भक्ति परंपरा को दो मुख्य वर्गों में बाँटते हैंः–

(i) सगुण भक्ति (विशेषण सहित)

(ii) निर्गुण भक्ति (विशेषण विहिन)

23. अलवार और नयनार किस मत से संबंधित थे?

उत्तर– (i) अलवार दक्षिण भारत में विष्णु के उपासक (वैष्णव मत के) थे।

(ii) नयनार दक्षिण भारत में शिव के उपासक (शैव मत के) थे।

24. जिम्मी से क्या अभिप्राय है ?

उत्तर– ज़िम्मी मुस्लिम शासकों के क्षेत्र में रहने वाले संरक्षित लोग थे। ये गैर मुस्लिम थे। इन लोगों को जजिया कर के बदले इस्लामी नियमों के पालन में छूट दी जाती थी।

25. अमीर खुसरो किसके शिष्य थे?

उत्तर– शेख निजामुद्दीन औलिया का

26. इस्लाम संप्रदाय किन दो शाखाओं में बँट गया?

उत्तर– दो शाखाओं में शिया और सुन्नी

27. 12 वीं शताब्दी के अंत में भारत आने वाले सूफी सिलसिलों में कौन सा सिलसिला सबसे अधिक प्रभावशाली रहा?

उत्तर– चिश्ती सिलसिला

28. चिश्ती दरगाहों में सर्वाधिक पूजनीय दरगाह किसकी है तथा यह कहाँ स्थित है?

उत्तर– (i) चिश्ती दरगाहों में सर्वाधिक पूजनीय दरगाह शेख मुइनुद्दीन चिश्ती की है।

(ii) यह अजमेर में स्थित है।

29. भारत में सूफी समुदायों में चिश्ती सिलसिला सबसे अधिक प्रभावशाली रहा, इसका क्या कारण था ?

उत्तर– भारत में चिश्ती सिलसिला सबसे प्रभावशाली रहा, इसका कारण यह था कि सूफी संतों ने न केवल अपने आपको स्थानीय परिवेश में अच्छी तरह ढाला अपितु भारतीय भक्ति परंपरा की कई विशेषताओं को भी अपनाया।

30. 8वीं से 18वीं शताब्दी तक की भक्ति और सूफी परम्पराओं को जानने के किन्हीं दो स्त्रोतों का उल्लेख कीजिए ? अथवा 8 वीं से 18 वीं सदी तक के नए साहित्यिक स्त्रोतों में कौन सी रचनाएं सम्मिलित की गई है? इनकी कोई दो विशेषताएं लिखें।

उत्तर– (i) संत कवियों की रचनाएं

(ii) संत कवियों के अनुयायियों (जो उनके संप्रदाय से थे) द्वारा लिखी गई उनकी जीवनियां

**विशेषताएंः–**

(i) इन्हें जनसाधारण की क्षेत्रीय भाषाओं में मौखिक रूप से अपने को व्यक्त किया था।

(ii) इनमें से अधिकतर रचनाएँ संगीतबद्ध हैं तथा संतों के अनुयायियों द्वारा उनकी मृत्यु के पश्चात् संकलित की गई।

31. लिंगायतों और नयनारों के बीच एक समानता और एक असमानता का उल्लेख कीजिए?

उत्तर– (i) समानता – दोनों ही जाति प्रथा एवं सामाजिक धार्मिक बुराइयों का विरोध करते हैं।

(ii) असमानताः– लिंगायत शिव की पूजा लिंग के रूप में करते हैं, जबकि नयनार शिव की पूजा मूर्ति व लिंग दोनों ही रूप में करते हैं।

32. सूफी परंपरा में सिलसिले का क्या अर्थ है? और इस्लामी दुनिया में सूफी सिलसिलों का गठन कब से होने लगा था?

उत्तर–(i) सिलसिला का शाब्दिक अर्थ है जंजीर, यह जंजीर शेख और मुरीद के बीच एक निरंतर रिश्ते की द्योतक है, जिसकी पहली अटूट पैगम्बर मोहम्मद से जुड़ी है।

(ii) बारहवीं शताब्दी के आसपास इस्लामी दुनिया में सूफी सिलसिलों का गठन होने लगा।

33. कबीर की बानी किन पुस्तकों/विशिष्ट परिपाटियों में संकलित है, नाम लिखिए?

उत्तर– (i) कबीर ग्रंथावली

(ii) कबीर बीजक

(iv) गुरु ग्रंथ साहिब में

34. किस प्रकार मीरा बाई ने जातिवादी समाज की रूढ़ियों का उल्लंघन किया?

उत्तर– मीरा के गुरु रैदास थे जो काशी के एक चर्मकार थे। इससे पता चलता है मीरा ने निम्न जाति के माने जाने वाले रैदास को अपना गुरु मानकर जातिवादी समाज की रूढ़ियों का उल्लंघन किया।

35. संप्रदाय के समन्वय से इतिहासकार क्या अर्थ निकालते हैं? इसका सबसे विशिष्ट उदाहरण कहाँ से मिली है?

उत्तर– (i) संप्रदाय के समन्वय से इतिहासकार का अर्थ पूजा प्रणालियों के समन्वय से है।

(ii) इसका सबसे विशिष्ट उदाहरण पुरी, उड़ीसा से मिलता है।

36. वैदिक परंपरा एवं तांत्रिक आराधना पद्धति में कभी कभी संघर्ष की स्थिति क्यों उत्पन्न हो जाती थी ?

उत्तर–(i) वैदिक परंपरा के प्रशंसक उन सभी विश्वासों की आलोचना करते थे जो ईश्वर की उपासना के लिए मंत्रो के उच्चारण के साथ यज्ञों के संपादन से हटकर थे।

(ii) तांत्रिक परंपरा के प्रशंसक वैदिक सत्ता की अवहेलना करते थे।

37. पीर शब्द का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– सूफियों के प्रत्येक सिलसिले का नेतृत्व जो संत करता था वह पीर कहलाता था। वह बहुत पवित्र जीवन व्यतीत करता था। सूफी अल्लाह तक पहुँचने के लिए पीर का होना आवश्यक समझते थे।

38. मुरीद शब्द का अर्थ स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर– एक पीर के अधीन जो शिष्य होते थे वे मुरीद कहलाते थे। सूफी विचारधारा में पीर एवं मुरीद के मध्य संबंधों का बहुत महत्त्व होता था। मुरीद अपने गुरु के पद चिन्हों पर चलता था।

39. भक्ति आंदोलन में अलवार स्त्री का नाम क्या था?

उत्तर– अंडाल

40. किस चोल सम्राट ने संत कवि अप्पार, संबंदर और सुंदरार (तीनों नयनार संत/शैव मत के है) की धातु प्रतिमाएं एक शिव मंदिर में स्थापित करवाई?

उत्तर–945 ईस्वी के एक अभिलेख के अनुसार चोल सम्राट परांतक प्रथम ने संत कवि अप्पार, संबंदर और सुंदरार की धातु प्रतिमाएं शिव मंदिर में स्थापित करवाई।

41. अतिया मस्जिद कहाँ स्थित है? इसका निर्माण कब हुआ?

उत्तर– जिला– मैमनसिंग, बांग्लादेश, निर्माण 1609 ई. में

42. चोल सम्राटों द्वारा निर्मित विशाल शिव मंदिरों के नाम लिखिए?

उत्तर– चिदम्बरम, तंजावुर और गंगैकोंडचोलपुरम के विशाल मंदिरों का निर्माण चोल सम्राटों ने करवाया।

43. 711 ईस्वी में किस अरब सेनापति ने सिंध को विजित कर लिया था ?

उत्तर– मुहम्मद बिन कासिम ने

44. जजिया कर क्या था?

उत्तर– जजिया कर एक धार्मिक कर था जिसे मुस्लिम शासक अपने राज्य की गैर इस्लामी प्रजा से संरक्षण की एवज में वसूलते थे।

<u>दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–</u>

1. अलवार और नयनार भक्ति परंपरा में जाति के प्रति क्या दृष्टिकोण था? इस परंपरा में स्त्रियों की उपस्थिति का भी उल्लेख कीजिए ?

**mÙkj & (i) अलवार और नयनार संतों का जाति के प्रति दृष्टिकोण –**

अलवार और नयनार संतों ने जाति प्रथा व ब्राह्मणों की प्रभुता के विरोध में आवाज उठाई। कुछ हद तक यह बात सत्य प्रतीत होती है क्योंकि भक्ति संत विविध समुदायों से थे जैसे ब्राह्मण, शिल्पकार, किसान, अस्पृश्य जाति के लोग आदि ।

**(ii) प्रारंभिक भक्ति परंपरा में स्त्री संत–**

इस परंपरा की सबसे बड़ी विशेषता इसमें स्त्रियों की उपस्थिति थी। अलवार परंपरा में अंडाल एकमात्र अलवार स्त्री संत और अंडाल ने स्वयं को विष्णु की प्रेससी मानकर उनकी स्तुति में भक्ति गीत गाये । करइक्काल अम्मइयार नयनार स्त्री संत थी। शिव भक्त करइक्काल अम्मइयार ने घोर तपस्या का मार्ग अपनाया। इन स्त्रियों ने अपने सामाजिक कर्तव्यों का परित्याग किया। इन स्त्रियों की जीवन पद्धति और उनकी रचनाओं ने पितृ सत्तात्मक आदर्शों को चुनौती दी।

**2.** प्रारम्भिक भक्ति परंपरा को स्पष्ट करते हुए इनका राज्य के प्रति दृष्टिकोण का भी उल्लेख कीजिए और इनकी रचनाओं को वेदों के समकक्ष क्यों कहा गया ? स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर– **(i)** धर्म के इतिहासकार भक्ति परंपरा को दो मुख्य वर्गों में बाँटते हैं सगुण भक्ति– इसमें ईश्वर का मूर्त रूप मानकर उसकी पूजा की जाती हैं।

निर्गुण भक्ति– इसमें ईश्वर के अमूर्त, निराकार रूप की उपासना की जाती हैं।

**(ii)** तमिलनाडु के अलवार और नयनार संत– प्रारंभिक भक्ति आंदोलन अलवारों और नयनारों के नेतृत्व में हुआ। अलवार व नयनार एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करते हुए तमिल में ईस्ट की स्तुति में भजन गाते थे। इन संतों ने यात्राओं के दौरान कुछ पावन स्थलों को अपने ईस्ट का निवास स्थान घोषित किया, जहां बाद में मंदिरों का निर्माण हुआ और ये तीर्थ स्थल माने गए।

**(iii)** प्रारंभिक भक्ति परंपरा में संतों का राज्य के साथ संबंध– तमिल भक्ति रचनाओं की एक मुख्य विषयवस्तु बौद्ध और जैन धर्म के प्रति उनका विरोध है। इतिहासकारों ने इस विरोध की व्याख्या करते हुए यह सुझाव दिया है कि परस्पर विरोधी धार्मिक समुदायों में राजकीय अनुदान एवं संरक्षण को लेकर प्रतिस्पर्धा थी। पल्लव, पांडयों एवं चोल शासकों ने भक्ति परंपरा को समर्थन दिया तथा विष्णु और शिव के मंदिरों के निर्माण के लिए भूमि अनुदान दिए।

नयनार और अलवार संत वेल्लाल कृषकों द्वारा सम्मानित होते थे, इसलिए शासकों ने भी उनका समर्थन पाने का प्रयास किया।

- अलवार और नयनार संतों की इन रचनाओं को वेद जितना महत्त्वपूर्ण बताकर इस परंपरा को सम्मानित किया गया। नलयिरादिव्यप्रबन्धम् को चारों वेदों के समकक्ष रखना अलवार तथा नयनार संतों के प्रभुत्व का उदाहरण हैं। इन संतों का प्रभुत्व इसलिए था क्योंकि इनकी परंपरा में जाति भेद नहीं था।

**3.** टिप्पणी लिखिएः **(i)** वीरशैव परंपरा **(ii)** इस्लाम के पांच सिद्धांत

**(iii)** खानकाह और सिलसिला **(iv)** सिख धर्म के पांच प्रतीक

उत्तर– **(i)** वीरशैव परंपरा/वीरशैव परंपरा की विशेषताएं–

12वीं शताब्दी में कर्नाटक में शैव धर्म का प्रचार प्रसार वीरशैव, लिंगायत के रूप में हुआ। वीरशैव व लिंगायत समुदाय के प्रवर्तक कल्याणी के कलाचुरी वंश के प्रधानमंत्री बासवन्ना नामक ब्राह्मण थे। इस समुदाय के संतों ने कन्नड़ भाषा में उपदेश दिए। उनके भक्ति गीतों को वचन शास्त्र कहा जाता था।

लिंगायत समुदाय की विशेषताएं– शिव की आराधना लिंग के रूप में करते हैं। इस समुदाय के पुरुष वाम स्कंध पर चांदी की एक डिबिया में एक लघु लिंग को धारण करते हैं। इस समुदाय के अनुसार मृत्योपरांत भक्त शिव में लीन हो जाएंगे तथा इस संसार में पुनः नहीं लौटेंगे। पुनर्जन्म के सिद्धांत में विश्वास नहीं करते। श्रद्धा संस्कार का पालन नहीं करते।

**(ii)** इस्लाम के पाँच नियम/सिद्धांत–

1. अल्लाह एकमात्र ईश्वर है, पैगंबर मोहम्मद उनके दूत है।
2. दिन में पांच बार नमाज पढ़ी जानी चाहिए।
3. खैरात एवं जकात बांटनी चाहिए
4. रमजान के महीने में रोजा रखना चाहिए।
5. हज के लिए मक्का जाना चाहिए।

**(iii)** खानकाह और सिलसिला– खानकाह–सूफी संतों का निवास स्थान खानकाह हुआ करता था। खानकाह का नियंत्रण शेख, पीर अथवा मुर्शिद के हाथ में था। खानकाह सामाजिक जीवन का केंद्र बिंदु था। शेख निजामुद्दीन औलिया की खानकाह उस समय के दिल्ली शहर की बाहरी सीमा पर यमुना नदी के किनारे गियासपुर में थी। शेख निजामुद्दीन ने कई आध्यात्मिक वारिसों का चुनाव किया और उन्हें उपमहाद्वीप के विभिन्न भागों में खानकाह स्थापित करने के लिए नियुक्त किया।

सिलसिला–सिलसिला का शाब्दिक अर्थ है जंजीर, यह जंजीर शेख और मुरीद के बीच एक निरंतर रिश्ते की घोतक है, जिसकी पहली अटूट कड़ी पैगंबर मोहम्मद से जुड़ी है। इस कड़ी के द्वारा आध्यात्मिक शक्ति और आशीर्वाद मुरीदों तक पहुंचता था। 12वीं शताब्दी के आसपास इस्लामी दुनिया में सूफी सिलसिला का गठन होने लगा।

**(iv)** सिख धर्म के पांच प्रतीक या पंच ककार– गुरु गोबिंद सिंह ने सिखों को पांच प्रतीक धारण करने का आदेश दिया, जिसे पंच ककार कहा जाता है। यह पांच प्रतीक है–बिना काटे केश, कृपाण, कच्छ, कंघा, लोहे का कड़ा।

**4.** कबीर की बानी तीन विशिष्ट परिपाटियों में संकलित है। व्याख्या कीजिए ?

उत्तर– कबीर की बानी तीन विशिष्ट परिपाटियों में संकलित है–

**(i)** कबीर बीजक– कबीर पंथियों द्वारा वाराणसी तथा उत्तर प्रदेश के अन्य स्थानों पर संरक्षित है।

**(ii)** कबीर ग्रंथावली– कबीर ग्रंथावली का संबंध राजस्थान के दादू पंथियों से है।

**(iii)** आदि ग्रंथ साहिब–कबीर के कई पद आदि ग्रंथ साहिब में संकलित है।

**5.** भक्ति परंपरा / आंदोलन की विशेषताओं का वर्णन कीजिए ?

उत्तर– मध्यकाल में कई धार्मिक विचारकों तथा सुधारकों ने भारत के सामाजिक धार्मिक जीवन में सुधार लाने के उद्देश्य से भक्ति को माध्यम बनाकर एक आंदोलन प्रारंभ किया, जो भक्ति आंदोलन के नाम से प्रसिद्ध हुआ। 6वीं शताब्दी में प्रारंभिक भक्ति आंदोलन की शुरुआत अलवार और नयनार संतों के नेतृत्व में हुयी।

भक्ति आंदोलन की मुख्य विशेषताएं हैः–

**(i)** भक्ति आंदोलन के दौरान दो प्रकार के भक्ति संतों का उदय हुआ– सगुण भक्ति संत और निर्गुण भक्ति संत

**(ii)** एक ईश्वर में आस्था–ईश्वर एक है वह सर्व शक्तिमान है।

**(iii)** बाह्य आडम्बरों का विरोध–भक्ति आंदोलन के संतों ने कर्मकाण्ड का खण्डन किया। सच्ची भक्ति से मोक्ष एवं ईश्वर की प्राप्ति होती है।

**(iv)** सन्यास का विरोध–भक्ति आंदोलन के अनुसार यदि सच्ची भक्ति है ईश्वर में श्रद्धा है तो गृहस्थ में ही मोक्ष मिल सकता है।

**(v)** वर्ण व्यवस्था का विरोध–भक्ति आंदोलन के आंदोलन के प्रवतकों ने वर्ण व्यवस्था का विरोध किया है। ईश्वर के अनुसार सभी एक है।

**(vi)** मानव सेवा पर बल–भक्ति आंदोलन के समर्थकों ने यह माना कि मानव सेवा सर्वोपरि है। इससे मोक्ष मिल सकती है।

**(vii)** हिन्दू मुस्लिम एकता का प्रयास–भक्ति आंदोलन के द्वारा संतों ने लोगों को यह समझाया कि राम, रहीम में कोई अंतर नहीं।

**(viii)** स्थानीय भाषाओं में उपदेश–संतों ने अपना उपदेश स्थानीय भाषाओं में दिया। भक्तों ने इसे सरलता से ग्रहण किया ।

**(ix)** समन्वयवादी प्रवृत्ति– संतों, चिन्तकों, विचारकों ने इर्ष्या की भावना को समाप्त करके लोगों में सामंजस्य, समन्वय की भावनाओं को प्रोत्साहन दिया ।

**(x)** गुरु के महत्व में वृद्धि–भक्ति आंदोलन के संतों ने गुरु एवं शिक्षक के महत्व पर बल दिया। गुरु ही ईश्वर के रहस्य को सुलझाने एवं मोक्ष प्राप्ति में सहायक होता है।

**(xi)** समर्पण की भावना–समर्पण की भावना से सत्य का साक्षात्कार एवं मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है।

**(xii)** समानता की भावना–ईश्वर के समक्ष सभी लोग समान है। ईश्वर सत्य है। सभी जगह विद्यमान है। उनमें भेदभाव नहीं है। यही भक्ति मार्ग का सही रास्ता है। भक्ति का पंथ सबके लिए खुला है। चाहे वह धनी हो या गरीब, ऊँची जाति का हो या नीची जाति का, स्त्री हो या पुरुष ।

**6.** **आप कैसे कह सकते हैं कि कबीर और नानक देव सामाजिक चेतना के प्रहरी थे ?**

**उत्तर**–मध्यकालीन भक्ति आंदोलन में संत कबीर एवं गुरु नानक का महान योगदान हैं। कबीर और नानक ने एक

समान धार्मिक और सामाजिक बुराइयों का विरोध किया। इन दोनों संतों ने जाति प्रथा और सामाजिक भेदभाव को अस्वीकार कर दिया और धार्मिक पाखंड और कर्मकांडों के प्रति जनसामान्य को जागृत करने का प्रयास किया। ये दोनों संत सरल जीवन और उपासना पद्धति के समर्थक थे।

इस प्रकार कबीर और नानक ने लोगों को धार्मिक पाखण्डों तथा कर्मकाण्डों के प्रति सचेत करने का प्रयास किया। अतः हम मान सकते हैं कि कबीर और नानक दोनों सामाजिक चेतना के प्रहरी थे।

**7. मीराबाई पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए ?**

उत्तर– मीराबाई संभवतः भक्ति परंपरा की सबसे प्रसिद्ध कवियत्री है। इनका जन्म कुड़की गांव (पाली) में हुआ था और इनका पालन–पोषण मेड़ता (नागौर) में हुआ था। मारवाड़ की राजपूत राजकुमारी मीराबाई का विवाह मेवाड़ के सिसोदिया वंश के शासक सांगा के पुत्र भोजराज के साथ हुआ। अपने पति की मृत्यु के बाद मीराबाई ने विष्णु के अवतार कृष्ण को अपना एकमात्र पति स्वीकार किया। मीरा के गुरु रविदास/रैदास थे जो काशी के एक चर्मकार थे। इससे पता चलता है कि मीरा ने निम्न जाति के माने जाने वाले रविदास को अपना गुरु मानकर जातिवादी समाज की रूढ़ियों का उल्लंघन किया ।

**8. इतिहासकार धार्मिक परम्परा के इतिहास का पुनर्निर्माण करने के लिए किन–किन स्रोतों का उपयोग करते हैं?**

उत्तरः इतिहासकार धार्मिक परम्परा के इतिहास का पुनर्निर्माण करने के लिए अनेक स्रोतों का उपयोग करते हैं जिनमें प्रमुख हैं–मूर्तिकला, स्थापत्य कला, धर्मगुरुओं से जुड़ी कहानियाँ, दैवीय स्वरूप को जानने को उत्सुक स्त्री व पुरुषों द्वारा लिखी गई काव्य रचनाएँ। मूर्तिकला एवं स्थापत्य कला का उपयोग इतिहासकार तभी कर सकते है जब उन्हें इन आकृतियों और इमारतों को बनाने व उनका उपयोग करने वाले लोगों के विचारों, आस्थाओं तथा आचारों की समझ हो। धार्मिक विश्वासों से सम्बन्धित साहित्यिक परम्पराओं को समझने के लिए हमें कई भाषाओं की जानकारी होनी चाहिए।

**9. "इस्लाम और उसके सिद्धान्तों का पूरे उपमहाद्वीप में दूर–दराज तक फैलाव हुआ।" कथन को स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर– इस्लाम के आगमन के पश्चात् होने वाले परिवर्तन शासक वर्ग तक ही सीमित न रहकर पूरे उपमहाद्वीप में दूर–दराज तक तथा विभिन्न सामाजिक समुदायों, जैसे–किसान, शिल्पी, योद्धा, व्यापारी आदि के बीच फैल गए। जिन्होंने इस्लाम धर्म को स्वीकार किया उन्होंने सैद्धान्तिक रूप से इसकी पाँच मुख्य बातों / सिद्धांतों को माना।

**इस्लाम के पाँच नियम/सिद्धांतः–**

**(i)** अल्लाह एकमात्र ईश्वर है तथा पैगम्बर मोहम्मद उनके दूत हैं।

**(ii)** दिन में पाँच बार नमाज पढ़नी चाहिए।

**(iii)** जकात एवं खैरात बॉटनी चाहिए।

**(iv)** रमजान के महीने में रोजा रखना चाहिए।

**(v)** हज के लिए मक्का जाना चाहिए।

कुरान के विचारों की अभिव्यक्ति के लिए खोजा इस्माइली (शिया) समुदाय के लोगों ने देशी साहित्यिक विधा का सहारा लिया। विभिन्न स्थानीय भाषाओं में जीनन नाम से भक्ति गीतों को गाया जाता था जो राग में निबद्ध थे। इसके अतिरिक्त मालाबार तट (केरल) के किनारे बसे अरब मुसलमान व्यापारियों में स्थानीय मलयालम भाषा को अपनाने के साथ–साथ 'मातृकुलीयता' एवं 'मातृगृहता' जैसे स्थानीय आचारों को भी अपनाया। इस प्रकार इस्लाम और उसके सिद्धान्तों का पूरे उपमहाद्वीप में दूर–दराज तक फैलाव हुआ।

**10. सूफीवाद के प्रमुख धार्मिक विश्वासों और प्रथाओं पर चर्चा करें। अथवा सूफी मत क्या है, संक्षेप में लिखिए?**

उत्तर–**सूफीवाद की प्रमुख मान्यताएँ और प्रथाएँ थीं:–**

सूफी धार्मिक और राजनीतिक संस्थान के रूप में खलीफा के बढ़ते भौतिकवाद के खिलाफ थे। सूफियों ने धर्मशास्त्रियों द्वारा अपनाई गई कुरान और सुन्ना (पैगंबर की परंपराओं) की व्याख्या करने की हठधर्मिता परिभाषाओं और विद्वानों के तरीकों की आलोचना की। सूफियों ने ईश्वर के प्रति तीव्र भक्ति और प्रेम के माध्यम से मोक्ष प्राप्त करने पर जोर दिया। सूफियों ने अपने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर कुरान की व्याख्या की। उन्होंने लोगों को खिलाने के लिए लंगर (एक खुली रसोई) का आयोजन किया। सुबह से लेकर देर रात तक सभी क्षेत्रों के लोग सैनिक, दास, गायक, व्यापारी, कवि, यात्री, अमीर और गरीब वहाँ आते रहे। गायन और नृत्य उस परंपरा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया जिसे पहले इस्लाम में अनुमोदित नहीं किया गया था।

सूफियों ने या तो जिक्र (दैवीय नामों) को याद करके या समा के माध्यम से अपनी उपस्थिति को प्रकट करते हुए या रहस्यमय संगीत के प्रदर्शन से भगवान को याद किया।

**11. भक्ति आंदोलन में अलवार और नयनार परंपरा में अंतर स्पष्ट कीजिए ?**

उत्तर–

| अलवार | नयनार |
|---|---|
| 1. अलवार विष्णु भक्त थे। | 1. नयनार शिव भक्त थे। |
| 2. अलवार संतों की संख्या 12 थी। | 2. नयनार संतों की संख्या 63 थी। |
| 3. अलवार संतों की रचनाओं का संकलन नलयिरादिव्यप्रबंधन में किया गया। | 3. नयनार संतों की रचनाओं का संकलन तवरम में किया गया। |
| 4. अलवारों में एकमात्र महिला संत अंडाल थी। | 4. करइक्काल अम्मइयार प्रसिद्ध महिला संत थी। |

**12. बे–शरिया और बा–शरिया सूफी परंपरा के बीच एकरूपता और अंतर, दोनों को स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर– बे–शरिया और बा–शरिया सूफी परंपरा के बीच एकरूपता–

**(i)** बे–शरिया तथा बा–शरिया दोनों ही इस्लाम धर्म से संबंधित थे।

**(ii)** बे–शरिया तथा बा–शरिया दोनों ही इबादत पर अधिक बल देते थे।

**(iii)** दोनों के अनुसार – सर्वोच्च शक्ति केवल एक है 'अल्लाह'

**बे–शरिया और बा–शरिया सूफी परंपरा में अंतर–**

बे–शरिया इस्लामी कानून (शरिया) का पालन नहीं करते थे। इसके विपरीत बा शरिया इस्लामी कानून (शरिया) का पालन करते थे।

बे–शरिया सूफी संत खानकाह (आश्रम) का अपमान (तिरस्कार) करके फकीर की जिंदगी व्यतीत करते थे। इसके विपरीत बा–शरिया सूफी संत खानकाहों में रहते थे। खानकाहों में पीर अपने शिष्यों (मुरीदों) के साथ रहता था।

**13.** **चिश्ती सिलसिले ने भारतीय भक्ति परंपरा की कई विशेषताओं को अपनाया था, संक्षेप में स्पष्ट कीजिए ?**

**उत्तर**–समकालिक रहस्यवाद–भक्ति परंपरा में रहस्यवाद, ईश्वर से संवाद करने के तरीके और ईश्वर के साथ एकता की अनुभूति के रूप में दिखता है।

भक्ति परंपरा में रहस्यवाद के कुछ उदाहरणः–

भजन गाना, कीर्तन करना, अनुष्ठान करना

प्रार्थना करना, जप करना

तन को देवालय बनाकर ईश्वर के साक्षात्कार की कोशिश करना

सूफियों में रहस्यवाद– सूफियों ने भक्ति परंपरा के रहस्यवाद को अपनाया।

सूफी मुसलमान हैं, लेकिन उन्हें सर्वेश्वरवादी रहस्यवादी माना जाता है।

सूफ़ियों ने धार्मिक भावों को तीव्र करने के लिए संगीत और गीतों को सुनने पर जोर दिया।

जियारत/तीर्थयात्राः–

हिंदू धर्म में तीर्थयात्रा में शुद्धि, भक्ति और ज्ञान प्राप्ति के लिए पवित्र स्थलों की आध्यात्मिक यात्राएँ शामिल हैं। ये यात्राएँ, जो अक्सर ऋषियों और भक्तों द्वारा की जाती हैं, पुण्य, प्रायश्चित और गहन आध्यात्मिक समझ की खोज पर जोर देती हैं। भक्ति संतों ने पवित्र तीर्थस्थलों की यात्राएं की।

भक्ति आंदोलन से प्रभावित होकर सूफीवाद में भी जियारत की परंपरा का विकास हुआ। सूफीवाद में सबसे लोकप्रिय अनुष्ठानों में से एक सूफी संतों की कब्र कब्रों की जियारत है। किसी भी महत्व के स्थान पर जाने की रस्म को जियारत कहा जाता है।

संगीत प्रभावः–

संगीत हमेशा सभी भारतीय धर्मों के बीच एक समृद्ध परंपरा के रूप में मौजूद रहा है। विचारों को फैलाने के एक प्रभावशाली माध्यम के रूप में संगीत ने लोगों से पीढ़ियों के लिए अपील की है। भारत में दर्शक पहले से ही स्थानीय भाषाओं में भजनों से परिचित थे। इस प्रकार आबादी के बीच सूफी भक्ति गायन तुरंत सफल रहा। संगीत ने सूफी आदर्शों को मूल रूप से प्रसारित किया।

**एकेश्वरवादः—**

भक्ति परंपरा के अनुयायी एक ही सर्वशक्तिमान ईश्वर की पूजा करते हैं, जिसे कई अलग—अलग नामों से जाना जाता है। इसी प्रकार सूफी संत भी एकेश्वरवाद में विश्वास करते हैं।